विषय - संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीयवर्ष, तृतीयपत्र, डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
कादम्बरी - शुकनासोपदेश, महाराजा कॉलेज, आरा
गद्यांश व्याख्या दिनांक - 26/08/2020

विश्वरूपत्वमिव ग्रहीतुमाश्रिता नारायणमूर्तिम् ।
अप्रत्ययबहुला च दिवसान्तकमलमिव समुपचित-
मूलदण्डकोशमण्डलमपि मुञ्चति भूभुजम् ।

अर्थ - (विश्वरूपत्वमिव ग्रहीतुम्) मानों विश्व-
रूपत्व (अनेक प्रकार के भ्रामक रूपों के धारण करने
की शक्ति) को धारण करने के लिए (नारायण-
मूर्तिम् आश्रिता) विराट् भगवान विष्णु के शरीर
को आश्रित है। (अप्रत्ययबहुला च समुपचितमूल-
दण्डकोशमण्डलमपि दिवसान्तकमलमिव भूभुजं
मुञ्चति) प्रायः अविश्वासशीला यह लक्ष्मी तरह

Scanned with CamScanner

Date ___/___/_____ Page No.: _____

बढ़े हुए मूल (जड़) दण्ड (नाल) और कोश-मण्डल (बीजकोश-संघात) वाले दिनान्त कमल के समान बढ़े हुए मूल (वैपैतृक राज्य, मूल-रूप में प्राप्त देश आदि) दण्ड (सेना या कर) कोश (खजाना) और मण्डल (सामन्त-समूह) वाले राजा को भी त्याग देती है।

टिप्पणी - भगवान् नारायण का शरीर विश्वरूप है। अर्थात् समस्त ब्रह्माण्ड के रूप उसमें समाहित हैं। अथवा समस्त चराचर सृष्टि द्वारा जिसके रूप का निरूपण किया जाता है। (विश्वेन रूप्यते निरूप्यते यद्रूपं तद्विश्वरूपम्) कवि की उत्प्रेक्षा है कि मानो अनेकरूपता ग्रहण करने के लिए ही लक्ष्मी ने विराट् रूपधारी विष्णु के के शरीर का आलम्बन किया है। 'विश्वरूपत्वमिव गृहीतुम्' में स्पष्ट 'फलोत्प्रेक्षा' अलंकार है।

लक्ष्मी का कोई भरोसा नहीं। इससे बड़ी अविश्वासशीलता और क्या हो सकती है कि कमला होते हुए भी वह दिन ढलने पर समृद्ध मूल, दण्ड, कोश और मण्डल वाले भी अपने आश्रय कमल को दौड़कर चल देती है; तो दूसरी ओर मूल, दण्ड, कोश और मण्डल से समृद्ध भी अपने आश्रयभूत राजा को दौड़कर दूसरे राजा के पास भाग खड़ी होती है। भाग्य की विडम्बना से श्री से परित्यक्त कमल और राजश्री से परित्यक्त राजा यहाँ परस्पर उपमान-उपमेय को प्राप्त होते हैं। श्लेष से कमलपक्ष में मूल = जड़, दण्ड = नाल, कोश = बीजकोष, तथा मण्डल = व्यास व वृत्त

Scanned with CamScanner

Date __/__/____ Page No.: ______

विस्तार हेतो ~~सभा~~ राजा के पक्ष में मूल = निजी पैतृक राज्य, दण्ड = रक्षाव्यवस्था व करव्यवस्था, कोश = खजाना और मण्डल = देश या सामन्त-समूह - प्राय: बारह राज्यों का समूह - "स्यान्मण्डलं द्वादशराजके च देशे च बिम्बे च कदम्बके च" (विश्वकोश)।

पदव्याख्या - विश्वरूपत्वम् - विश्वस्य रूपाणि यस्मिन् तद् विश्वरूपम् (बहु०) तस्य भाव: विश्वरूपत्वम्।
ग्रहीतुम् - ग्रह् + तुमुन्। आश्रिता - आ+श्रि+क्त + टाप्। नारायणमूर्तिम् - नारायणस्य मूर्ति: (ष० तत्पु०) ताम्।
अप्रत्ययबहुला - न प्रत्यय: अप्रत्यय: (नञ्) अप्रत्ययो बहुलो यस्यां सा (बहु०)। दिवसान्तकमलम् - दिवसस्य अन्तम् दिवसान्तम् (ष० तत्पु०) दिवसान्ते कमलं दिवसान्तकमलं (स० तत्पु०)।
समुपचित मूलदण्ड कोश मण्डलम् - सम्यक् उपचितं समुपचितम् (सम् + उप + चि + क्त) (सुप्सुपा) मूलं च दण्डश्च कोशश्च मण्डलं च मूलदण्डकोशमण्डलम् (समा० द्व०) समुपचितं मूलदण्डकोशमण्डलं यस्य स: (बहु०) तम्। भूभुजम् - भुवं भुङ्क्ते भुनक्ति वा, भूभुज + क्विप्, द्वितीया एकवचन।